International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 06 | June - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

"गोंड जनजाति के महिलाओं के सांस्कृतिक विरासत का वर्तमान परिवेश" एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

गुड्डी नामदेव, समाजशास्त्र विभाग
श्री दावड़ा विश्वविद्यालय नया रायपुर (अभनपुर)

सारांश :- भारत के **"धान का कटोरा"** कहे जाने वाले राज्य छत्तीसगढ़ प्रदेश को जनजातियों का प्रदेश भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में अनेक जनजातीयां पाई जाती हैं ।उनमें से बैगा, मुंडा ,गोड़,भील आदि है ।इस शोध पत्र में जनजातियों का परिचय देते हुए उन जनजातियों के महिलाओं के सांस्कृतिक विरासत और उनके शिक्षा का वर्णन करने का प्रयास किया गया है और उनके लिए क्या-क्या योजनाएं तैयार की गई है छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा उसका वर्णन करने का प्रयास किया गया है। और उनके आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर क्या-क्या योजनाएं बनाए गए हैं उनमें भी प्रकाश डालने की कोशिश की गई है।

मूल शब्द :----

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला में बैगा ,गोड़ मुंडा, भील और उपजातियां जैसे कि मोरिया अबूझमाड़िया, दोरला, हल्बा, भतरा,गदवी ,परधान,मारिया, अगरिया ,कमार आदि ।

भूमिका :----

"हिंद देश के निवासी सभी जन एक है ,
रंग रूप वेशभूषा चाहे अनेक है,
हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं।"
"" पद्म श्री पंडित विनय चंद्र मौद्गल्य""

जैसा कि हम सब विकसित भारत के निवासी हैं यहां अनेक समूह के लोग रहते हैं उन समूह में से एक बड़ा हिस्सा जनजातीय समूह का है कहने का तात्पर्य है कि हमारे भारत देश में गोंड जनजाति का एक बड़ा हिस्सा निवास करता है ।जिनकी अपनी भाषा, संस्कृति, सभ्यता,वेशभूषा और अपनी कलाकृति है ।जो और समूह से उन्हें अलग पहचान दिलाती हैं। ऐसे ही भारत के" धान का कटोरा "कहे जाने वाले राज्य छत्तीसगढ़ में गोंड जनजातियों का है एक बड़ा हिस्सा है छत्तीसगढ़ में निवासरत जनजाति की अपनी एक सांस्कृतिक पहचान है। गोंड़ जनजाति भारत के सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक है प्रत्येक राज्य में कुछ न कुछ हिस्सा जनजातियों का होता ही है ठीक उसी प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य में भी बस्तर संभाग में जनजातियों के एक बड़ा हिस्सा निवास करता है।

बस्तर संभाग-

बस्तर संभाग में मूल रूप से जनजातियों का गढ़ कहा जा सकता है ।पूरे छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा जनजातियों का समूह बस्तर के अंचल में देखने को मिलता है ।यह जनजाति न केवल बस्तर बल्कि संपूर्ण छत्तीसगढ़ को अपनी रीति -रिवाज और संस्कृतियों के नाम से प्रसिद्ध है। बस्तर के जनजातियों में महिलाओं का विशेष रूप से महल भी है। यह महिलाएं ज्यादातर ग्रहणी के रूप में परिवार की देखरेख करती हैं। साथ ही यह समय निकालकर लकड़ी से कलात्मक चीजें जैसे बांस की टोकरी एवं अन्य आकर्षक चीज भी बनाते हैं। बस्तर के लोग विशेष रूप से प्रकृति की ही पूजा करते हैं यह लोग मुख्य रूप से "बूढ़ा देव और आंगा देव "की पूजा करते हैं जो की प्रकृति का ही स्वरुप है बस्तर के जनजातीय विवाह नाचा विशेष रूप से सभी कार्यक्रम में अपनी भाषा बोली वह जीवन के सचित्र वर्णन देखने को मिलता है।

बस्तर में गोड़ महिलाओं का वर्णन :--

जैसा कि हमने ऊपर वर्णन कर चुके है की जनजातियों के एक बड़ा हिस्सा बस्तर संभाग में निवास करता है तो इन जनजातियों में महिलाओं को सम्मानिय स्थान प्राप्त है । कहा जाता है कि गोढ़ो में पुरुषों का स्थान एक प्रतिशत है तो महिलाओं का स्थान १.५ प्रतिशत है। गोंड जनजाति की महिलाएं घर के आय के धुरी होती हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि वह पुरुषों से ज्यादा का घर की आर्थिक सहायता में मदद करती हैं ।गोढ़ महिलाएं आजकल काफी उन्नतशील हो गई है ।गोंड जनजातियों में लिंग भेदभाव नहीं होता है परंतु शिक्षा के क्षेत्र में वे लड़कियों के शिक्षा के प्रति ज्यादा ध्यान नहीं देती है। गोंड जनजाति के महिलाओं को वह सभी अधिकार प्राप्त है जो अधिकार लड़कों को प्राप्त होते हैं लड़कों को जो अधिकार प्राप्त है जैसे कि खाने-पीने नाचे अपने पसंद के लड़की से शादी करने का अधिकार। ऐसे सभी अधिकार महिलाओं को प्राप्त होते हैं। जनजातीय महिलाओं में यह भी देखने को मिला है कि वे पुरुषों से बेहतर तरीके से आय अर्जित कर सकते हैं ।वह पुरुषों से बेहतर तरीके से अपने हाथों से बनाए गए सामानों को बेंच सकते हैं ।वह पुरुषों से बेहतर तरीके से अपनी आय के साधनों में वृद्धि कर सकती हैं।

बस्तर और सरगुजा संभाग में सामान्य यह देखने को मिल ही जाता है कि वहां के छोटे-छोटे गांव में जहां हाट बाजार लगता है वहां महिलाएं ही ज्यादातर सामानों को क्रय विक्रय करते देख सकते हैं। आदिवासी महिलाएं कम पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी काफी समझदार होती है। आदिवासी पुरुष सीधे-साधे होते हैं परंतु उसके विपरीत आदिवासी महिलाएं पुरुषों से ज्यादा समझदार होते हैं।

जहां तक मैं यह समझ पा रही हूं कि उनके आय के साधन थोड़े से सीमित है जो वह सामान बनाते हैं जो वे जंगल से सामान लेकर आते हैं जो वह हाथों से टोकरी आदि जो बहुत सारी सामान बनाते हैं उनको उनके वस्तुओं का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।आय के साधन सीमित होने के कारण उनका ध्यान शिक्षा की ओर नहीं जा पता है। शिक्षा के अभाव में यह जनजातियां थोड़ी-सी पिछड़ी हुई जनजाति की कतार में आ जाते हैं इन जनजातियों को ऊंचा उठने के लिए शिक्षा का उचित व्यवस्था करना जरूरी है। गोंड जनजातियों के बारे में और गहराई से समझने के लिए उनके ऐतिहासिक विरासत को भी जानना

जरूरी है। ऐतिहासिक विरासत में जनजातियों के रहन-सहन, रीति रिवाज, कलाकृति, बोली भाषा ,व्रत -त्यौहार आदि को जानना है। ताकि जनजातियों को और अच्छे से समझ सकें और उन में जो कमी है उन कमियों को दूर कर सके और उनको ऊंचा उठाने का प्रयास कर सकें ।उनके आर्थिक सामाजिक स्थिति को समझ कर उन जनजातियों के महिलाओं के आय को बढ़ाने और शिक्षा का उचित व्यवस्था करने और जनजातियों के महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कोशिश कर रहे हैं।

गोड़ जनजातियों का ऐतिहासिक विरासत:----

किसी भी जाति, समूह और समुदाय को समझना है तो उसकी ऐतिहासिक विरासत को समझना जरूरी है क्योंकि ऐतिहासिक विरासत से ही हमें यह पता चलता है कि उनका इतिहास कैसा है ?उनके सभ्यता संस्कृति कैसी है? वह जिस स्थान पर निवास करते थे उस स्थान से उनका कितना गहरा संबंध है ?यह सब हमें उनके ऐतिहासिक विरासत के अध्ययन करने से ही पता चलता है । उनके रहन-सहन खान पान संस्कृति सभ्यता ,रीति रिवाज, कैसी है ? कौन सी भाषा का प्रयोग करते हैं ?यह सब हमें ऐतिहासिक विरासत के अध्ययन से ही पता चलता है।

जैसा कि हम पहले यह वर्णन कर चुके हैं कि भारत एक विकासशील देश है और यहां अनेक राज्य है उन्हीं राज्यों में से एक राज्य छत्तीसगढ़ जिसे "धान का कटोरा" भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य जनजातियों के निवास स्थान का गढ़ भी माना जाता है। छत्तीसगढ़ में निवास करने वाले जनजातियों में गोंड जनजाति एक प्रमुख जनजाति है गोड़ जनजाति का प्राचीन इतिहास गोंडवाना राज्य से जुड़ा है जैसा कि हम सब यह सुनते आ रहे हैं कि गोंडवाना राज्य की रानी दुर्गावती थी। जिनकी कथाएं आज भी सभी बस्तर संभाग के जिलों में सुनी जाती है ।गोंड जनजाति भारत के प्रमुख जनजातियों में से एक है ।मध्य भारत के मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठारों और जंगली भागों में अभी भी बहुत से जनजातियों के लोग निवास करते हैं। उन सभी जनजाति में गोड़ जनजाति अपनी अलग पहचान रखती है । छत्तीसगढ़ की जनजाति अन्य राज्यों के जनजातियों से अलग इस लिए है क्योंकि यहां की जनजातियां तेंदू पत्ते तोड़ने के नाम से प्रसिद्ध है ।यहां तेंदूपत्ता को "हरा सोना"की उपाधि दी गई है । किसी अन्य राज्यों को यह उपाधि प्राप्त नहीं हैं। इसीलिए छत्तीसगढ़ के जनजाति अन्य जनजातियों से थोड़ी सी अलग है। छत्तीसगढ़ की जनजातियों की ऐतिहासिक विरासत को अग्रलिखित

बिंदुओं के आधार पर हम समझने की प्रयास करेंगे:---

- पारंपरिक रीति रिवाज, वेशभूषा त्योहार और रस्में
- कलाकृतियां
- भाषा और बोली
- आर्थिक और सामाजिक स्थिति

पारंपरिक रीति -रिवाज, त्यौहार और वेश-भूषा

"छत्तीसगढ़" मध्य भारत की धड़कन की तरह है जो एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य है यहां विभिन्न जनजातीय (बैगा गोड़ भील मरिया) और ग्रामीण समुदाय जो अपने पारंपरिक रीति रिवाज को आज भी जीवित रखे हुए हैं। कहां जाता है कि यहां के पारंपरिक रीति रिवाज ना केवल धार्मिक आस्था से जुड़ी हुई है बल्कि प्रकृति ,सामाजिक- संरचना ,कृषि चक्र, और लोक संस्कृति से भी जुड़ीं हुई है ।यहां के जनसंख्या में जनजातियों की भागीदारी बहुत बड़ी है। जिनकी जीवन जीने की शैली, सोच और सामाजिक परंपरा, रीति -रिवाजों से गहराई से जुड़ी है। जैसे कि हम सब यह जानते हैं कि छत्तीसगढ़ के पारंपरिक रीति-रिवाज,धार्मिक विश्वास और देवी देवताओं की पूजा पाठ ,खेल ,कलाओं और प्राकृतिक आदि तक की सीमित नहीं है बल्कि यह पारंपरिक रीति -रिवाज मनुष्य के साथ उनके संबंधों को भी दर्शाता है। जनजाति लोग प्रकृति से बहुत गहराई से जुड़े हुए रहते हैं उनकी यह मान्यता रहती है कि किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले प्रकृति की पूजा करनी चाहिए । गोड़ जनजाति के लोग प्रकृति से इस हद तक जुड़े रहते हैं कि वह प्रकृति और देवी देवताओं की पूजा नाच गा कर खुशी मना कर एक साथ एकजुट होकर पूजा अर्चना करते हैं। और प्रकृति देव को खुश करने का प्रयास करते हैं जनजाति लोग बुवाई के पहले खेतों में खेत की पूजा करते हैं बुवाई के बाद हरेली के त्यौहार में संपूर्ण कृषि में प्रयोग

की जाने वाली उपकरणों की पूजा करते हैं । हरेली त्यौहार में एक पारंपरिक खेल जिसे गेड़ी कहते हैं का भी लुफ्त उठाते हैं गेड़ी की बनावट दो लकड़ियों में खड़े होकर लकड़ी के सहारे चला जाता है।और पोरा में जुताई में मदद करने वाले बैलों की जोड़ी की पूजा करते हैं खेतों में जाकर धान के कटाई के पहले खेतों में पूजा करते हैं और थोड़ा सा धान देवी देवताओं को अर्पित करते हैं फिर उसके बाद फसल कटाई का कार्य आरंभ करते हैं। बस्तर जिला में हरेली त्यौहार के पहले गोचा महोत्सव मनाया जाता है यह गोचा महोत्सव रथ यात्रा के रूप में मनाया जाता है ।जो पारंपरिक रीति रिवाज को दर्शाता है। पोरा त्यौहार के बाद छत्तीसगढ़ का एक पारंपरिक त्योहार जिसको तीजा कहते हैं को वे बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ मनाते है इस त्यौहार में महिलाएं अपने मायके जाकर इस त्यौहार को मानते हैं और आनंद लेते हैं। इसके अलावा दशहरा, छेरछेरा अक्ति आदि बहुत सारे पारंपरिक त्यौहारों को मानते हैं।

विवाह और अन्य पारंपरिक रस्में :----

छत्तीसगढ़ के जनजातियों में जन्म से लेकर मृत्यु तक की अनेक रस्मों का पालन करते हैं ।जनजातियों में विवाह के अनेक प्रकार हैं जैसे की **"भगेली विवाह"** (इस विवाह में भाग कर लड़का लड़की शादी करते हैं), **"पठानी विवाह"** (इस विवाह में लड़की के द्वारा लड़के के घर पर बारात लेकर जाया जाता है) **" चढ़ विवाह"** (इस विवाह में लड़कों के द्वारा बारात लेकर लड़की के घर आया जाता है)

बच्चों के जन्म के बाद छठ्ठी रस्म मनाया किया जाता है। बच्चे के जन्म के समय नाच गाकर अपनी पारंपरिक खाद्य पदार्थ महुआ का सेवन करते हैं आनंद लेते हैंऔर उसके बाद नामकरण।संथाल जाति मैं गोत्र को इष्ट देव के रूप में माना जाता है। मृत्यु के समय मृत्यु भोज का भी विशेष प्रावधान रहता है इसमें मृतक परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर सागे- संबंधियों के साथ खाना खाया जाता है। छत्तीसगढ़ के जनजातियों में जो रस्में और विवाह के जो नियम होते वह मात्र औपचारिक है उनकी असली पहचान तो उनके आपसी समझ आपसी एकता जो एक दूसरे के तीज -त्यौहार , रस्में (चाहे वह विवाह हो या छठी या मृत्यु भोज) में शामिल होना जो उनकी पारंपरिक एकता का सूचक दर्शाता है। जनजाति समूह के महिला हो या पुरुष वह अपने समुदाय के लोगों को कभी भी विपत्ति कठिन परिस्थिति में अकेला नहीं छोड़ते हैं चाहे वह खुशी का माहौल हो या दुख का समय हो वह सदैव एक साथ अपनी समूह का साथ देते हैं जो बहुत ही अच्छा संदेश देता है।

वेशभूषा:--

जनजाति लोग अपने पारंपरिक वेशभूषा ही धारण करना पसंद करते हैं। अक्सर आदिवासी जनजाति के महिला -पुरुष चमकीले वेशभूषा विशेष त्योहारों में पहनना पसंद करते हैं ।वैसे तो आदिवासी जनजातियों के पुरुष "धोती कुर्ता और गमछा" पहनते हैं। और उसके साथ पैरों में "भदई "नमक जूता पहनते हैं और सर पर पगड़ी भी धारण किए रहते हैं जिसे आमतौर पर "पागा" भी कहा जाता है। महिलाएं लुगरा और पोल्खा जिसे हम साड़ी और ब्लाउज भी कह सकते हैं आमतौर पर धारण करते हैं। और माथे पर टिकली लगाना और हाथों में चूड़ियां पहनना उन्हें बहुत पसंद है। चूड़ियों को सुहाग के निशान और सौभाग्य का सूचक मानते हैं इसलिए प्रत्येक नारी चूड़ी पहनना पसंद करती हैं।

आभूषण:----

जनजातीय महिलाएं विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनना पसंद करती हैं जिसे मैं इस चित्र के माध्यम से दर्शाने की कोशिश की हूं कि छत्तीसगढ़ में जनजातीय महिलाएं कौन-कौन से जेवर कहां-कहां पहने जाते हैं।

International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 06 | June - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

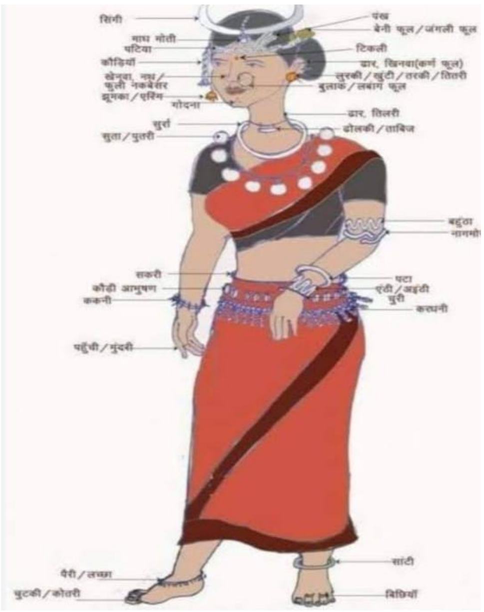

कलाकृति

छत्तीसगढ़ के जनजातीयों के महिला- पुरुषों के हाथों में कला की अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। जनजातीय महिला -पुरुषों की कलाकृति के अद्भुत दृश्य घर के सजावट से प्रारंभ होता है सामान्य जनजातियों के घर मिट्टी से बने होते है ।और वह अपने घरों के दीवानों को विभिन्न प्रकार के पशु -पक्षियों के चित्रों और फूलों के चित्रों से बनाकर बाहर और भीतर के दीवारों को सजाये हुए रहते हैं। इसके अलावा बांस से टुकनी बनाना, पत्तों से पत्तल और धोने बनाना और लकड़ी से विभिन्न प्रकार के वस्तुए बनाना आदि शामिल हैं। अतः हम कह सकते हैं की जनजाति महिला -पुरुष दोनों में कलाओं की कोई कमी नहीं है। छत्तीसगढ़ के जनजातियों के सबसे प्रमुख कलाकृति "झारा" कलाकृति है ,जो उनको अलग पहचान दिलाता है।

भाषा और बोली

छत्तीसगढ़ में जनजातियों की भाषा और बोली अनेक है क्योंकि यहां जनजातियों के विभिन्न जाति और उपजाति निवास करते हैं जिनकी अपनी भाषा और बोली है जिनकी अपनी एक विशेषता है। कुछ विशेष जनजातियों की जाति और उनकी बोलियां इस प्रकार है:

- **गोंड:** गोंडी या कोया बोली.
- **उरांव:** कुडुख बोली.
- **कोंध:** कुई बोली.
- **दोरला:** दोरला बोली.
- **परजा:** परजा बोली.
- **बैगा:** बैगा बोली.
- **कमार:** कमारी बोली.
- **हल्बा:** हल्बी बोली.
- **कोरवा:** कोरवी बोली.
- **मुंडा:** मुण्डारी बोली.
- **धुरवा:** धुरवी बोली

अतः मुझे यह कहते हुए अत्यंत हर्ष महसूस हो रहा है कि छत्तीसगढ़ में निवास करने वाले जनजातीय पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में आने के बावजूद भी अपनी सभ्यता और संस्कृति को नहीं भूले हैं वह अपनी सभ्यता और

संस्कृति को अभी तक बचा के रखे हैं रखे हैं मैं गर्व महसूस कर रही हूं कि मैं ऐसे जनजाति वाले राज्य का हिस्सा हूं।"जय छत्तीसगढ

आर्थिक और सामाजिक स्थिति

छत्तीसगढ़ में जैसा की जनजातियों का एक बड़ा हिस्सा निवास करता है। उन जनजातियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में काफी विविधता है ।उन जनजातियों में बहुत-सी जनजातीय आर्थिक रूप से समृद्ध हैं तथा कुछ जनजातीय आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है।

जनजातियों का मुख्य व्यवसाय कृषि और वनों उपज है अर्थात कृषि और वन से प्राप्त होने वाले फल फूल जड़ी बूटी आदि से वे अपना आर्थिक आय अर्जित करते हैं। बहुत सारे जनजातियों का मुख्य व्यवसाय शिकार करना और मछली पकड़ना भी है। जिससे उन्हें काफी हद तक आय उतना ज्यादा नहीं मिल पाता है जितना उन्हें मिलना चाहिए जिससे वे गरीबी भुखमरी आदि समस्याओं का सामना करते हैं। जनजातियों के आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए शासन द्वारा अनेक कार्य किये जा रहे हैं जैसे कृषि के उन्नत तरीकों का ज्ञान देना मछली पालन करने के तरीकों का ज्ञान देना जंगल से प्राप्त हुई वस्तुओं का उचित बिक्री कराना आदि अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां शासन के द्वारा जनजातियों को दिया जा रहा है जिससे वे पहले की अपेक्षा वर्तमान में अधिक आय अर्जित कर रहे हैं। और काफी हद तक उनकी आर्थिक स्थिति पहले के अपेक्षा वर्तमान में सुधर गई है। जनजातियों की सामाजिक स्थिति में पहले की अपेक्षा वर्तमान में बहुत सुधार आ गया है जैसे कि वे शिक्षा के प्रति ध्यान नहीं देते थे परंतु वर्तमान में वे शिक्षा के प्रति ध्यान दे रहे हैं। पहले जनजाति लोग तबीयत खराब होने पर डॉक्टर के पास नहीं जाते थे परंतु आजकल वे स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देते हुए उचित समय में उचित निर्णय लेकर सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। पहले जनजातियों को छुआछूत की भावना से देखते थे परंतु आजकल छुआछूत की भावना नहीं है।

सभी जनजातीय सामान्य रूप से एक ही समाज में निवास करते हैं। शासन और सरकार के अथक प्रयास से जनजातियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में काफी हद तक सुधार हो गई है । इन सब का श्रेय सरकार को ही

जाता है ।जिन्होंने जनजातियों की आर्थिक सामाजिक स्थिति को समझा और उनके स्थिति को सुधारने के लिए अनेक कार्यक्रम अनेक योजनाएं लागू की जिनका वे लाभ उठाकर समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने की कोशिश कीहैं।

वर्तमान में गोड़ जनजाति के महिलाओं का शिक्षा का स्तर

भारतीय संस्कृति और परंपरा में जनजातियों का एक विशेष स्थान रहा है भारत में पिछले कुछ समय से जनजाति महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है छत्तीसगढ़ राज्य में दंतेवाड़ा जिला में सबसे अधिक लिंगानुपात देखा गया है।

छत्तीसगढ़ में बस्तर संभाग में हल्बी ,बैगा, गोड़,मोरिया भतरी आदि प्रमुख जनजातियां है इन जनजातियों में भौगोलिक एकीकरण विशेष संस्कृति पिछड़ापन संकुचित सभा आदि लक्षण शामिल है जनजातियों में प्रचलित प्रथा जैसे सती प्रथा ,बालिका विवाह प्रथा, कन्या वध आदि प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया गया है ।जनजाति समाज में महिलाओं के प्रति प्रचलित विभिन्न तरह की कुप्रथाएं धीरे-धीरे समाप्त होती रही है ।तथा जनजाति समाज मुख्य धारा से जुड़ता जा रहा है वास्तविकता यह है कि आज भी कुछ प्रतिशत महिलाओं को छोड़कर शेष महिलाएं समस्थ क्षेत्रों में पीछे हैं ।कभी पारिवारिक तो कभी सामाजिक स्तर पर महिलाओं का आगे बढ़ने से रोक दिया जाता है। आवश्यकता है कि इन समाज में महिलाओं के मानव अधिकारों को जानकर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने एवं उनके खिलाफ हो रहे शोषण को खत्म करने का प्रयास करें ताकि हमारा समाज हमारा राष्ट्र महिला पुरुष को समान रूप से समझे उनको सामान्य रूप से अधिकार प्राप्त हो आधुनिक समय में जनजातीय महिलाएं पुरुष दोनों कंधे से कंधा मिलाकर वे सभी कार्य कर रहे हैं जिसे केवल यह समझा जात था कि वह पुरुष ही कर सकते हैं ।जनजातीय महिलाएं सशक्तिकरण ने नये आयाम को प्राप्त किया है एवं जनजाति महिलाओं को सीमित क्षेत्र तक ही सिमटा हुआ समझा जाता था वह आज इन्हीं महिलाओं ने शोषण के जंजीरों को तोड़कर अपने क्षेत्र, समाज और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभा से राष्ट्र को गौरवान्वित कर दिया है ।उदाहरण के लिए आज देखा जाए तो हमारे महामहिम राष्ट्रपति "श्रीमती द्रौपदी मुर्मू "महिलाओं के लिए एक मिसाल है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ जनजाति है महिलाओं में श्रीमती राज मोहिनी देवी एवं श्रीमती फुल बासन बाई को समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु पद्मश्री सम्मान मिला है। वहीं बस्तर संभाग के कोण्डागांव जिले की सुश्री लता उसेंडी महिला बाल विकास विभाग मंत्री बनी। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ राज्य की महिला विधायक श्रीमती **लक्ष्मी राजवाड़े** छत्तीसगढ़ की

एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं । वह छत्तीसगढ़ में महिला एवं बाल विकास मंत्री हैं। वह दिसंबर 2023 में भटगांव विधानसभा क्षेत्र से 2023 छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव जीतकर विधायक चुनी गईं। छत्तीसगढ़ में महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए महतारी वंदन योजना चलाई जा रही है । जनजातीय महिलाओं वे सभी कार्य कर रहे हैं इससे पहले केवल पुरुष प्रधान कार्य समझ जाता था ।सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सभी क्षेत्रों में जनजातीय महिला महत्व भागीदारी बढ़ रही है। महिलाओं को सम्मान देने के लिए शासन द्वारा राशन कार्ड में मुखिया के नाम में पुरुषों के नाम को हटकर महिलाओं का नाम जोड़ा गया है जिससे महिलाओं को और सम्मान मिलने लगा है। इसके अलावा 26 जुलाई 2018 का दंतेवाड़ा जिला के "हिरनार "में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रपति महोदय द्वारा" ई रिक्षा कैफे " शुभारंभ किया गया है। छत्तीसगढ़ में महिला जनसंख्या सूचकांक निम्न है

कुल जनसंख्या	1.27
1. राज्य की कुल जनसंख्या 2. महिलाओं की जनसंख्या वृद्धि दर	46.76 दशकीय (पुरुष 22.52%)

बस्तर संभाग में जनजाति जनसंख्या लिंगानुपात में साक्षरता दर

क्रमांक	लिंगानुपात में साक्षरता दर	
1 2 3 4 5 6. 7. 8. 9. 10.	कुल जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या कुल जनसंख्या में पुरुष जनसंख्या महिला जनसंख्या छत्तीसगढ़ जनजातीय साक्षरता महिला साक्षरता दर छत्तीसगढ़ का लिंगानुपात जनजातीयलिंगानुपात	2,55,45,198 78.22 1,28,32,895 1,27,12,303 50.11 41.38 991 1020

छत्तीसगढ़ में जनजाति महिलाओं के जीवन शैली

जनजातीय महिलाओं के जीवन शैली बहुत ही साधारण और सरल है। जनजाति महिलाओं का ज्यादातर समय कृषि संबंधी कार्य करने में और घर की एक निश्चित भू-भाग में सब्जी आदि उगाना और मुर्गा, मुर्गी,गाय ,बकरी,सुअर पालन करके इनके द्वारा प्राप्त उत्पादन से जीविकोपार्जन किया जाता है इसके अलावा जनजातीय महिलाएं सघन वनों एवं जंगलों के बीच में जाकर तेंदु पत्ता, चिरौंजी, चार, महुआ ,भेलवा आदि को जंगल से प्राप्त करके उनका स्थानीय बाजारों में विक्रय कर देना। जनजातीय मैंने अपने घरों को भी बहुत अच्छे से सजा रहते हैं।

गोड़ जनजाति महिलाओं के शिक्षा के स्तर में किए जा रहे प्रयास

सच कहा जाता है एक इंसान को सफल बनाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान देता है शिक्षा केवल किताबों को पढ़कर नहीं आती शिक्षा तो देख कर सुनकर सीख कर किसी के द्वारा ग्रहण करके भी लिये जा सकता है। जनजातियों में शिक्षा का अभाव है इन्हीं अभावों को दूर करने के लिए और जनजाति महिलाओं के साक्षरता के स्तर को देखते हुए छत्तीसगढ़ सरकार ने उनके साक्षरता के स्तर को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रम चला रहे हैं। जनजातीय महिलाएं शिक्षित होकर अपने लिए और अपने समाज के हित के लिए आगे बढ़कर काम करें क्योंकि शिक्षा ही एक

ऐसा माध्यम है जो इंसान को उसकी खुद की पहचान दिलाने में मदद करती है ।और जनजातियों में शिक्षा क्या अभाव होने के कारण वह मान और प्रतिष्ठा नहीं मिल पाती है जिनकी वे अधिकतरी है इसलिए केंद्र राज्य सरकार दोनों मिलकर उनके शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं लागू की है जो अग्रलिखित है।

क्रमांक	शासन द्वारा महिलाओं के शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए किए गए कार्यक्रम
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना डिजिटल जेंडर एटलस सर्व शिक्षा अभियान राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान उड़ान Stem शिक्षा “स्वयं “शिक्षा योजना कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना:-----इस योजना के अंतर्गत लड़कियों के शिक्षा को अनिवार्य और सुनिश्चित करने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना सन 2015 में शुरू किया गया इस योजना का लक्ष्य बालिकाओं को बचाना और उन्हें शिक्षित करना है इस योजना का लाभ आर्थिक रूप से कमजोर महिलाएं उठा सकती हैं जिनकी बेटी जन्म ली हो। इस योजना के यह भी लाभ होगा कि जनजातीय समूह के महिलाओं का शिक्षा के स्तर को एक नया आयाम मिल पाएगा जिससे उन जनजातियों में शिक्षा का स्तर जो नीचे जा रहा है वह कहीं ना कहीं ऊंचा उठ जाएगा ।एक कहावत-”सब पढ़े सब बड़े “चरितार्थ हो जाएगा।

2. डिजिटल जेंडर एटलस:-----भारत में लड़कियों की शिक्षा के लिए डिजिटल जेंडर एटलस लॉन्च किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने नई दिल्ली में मीडिया के समक्ष भारत में लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए डिजिटल जेंडर एटलस प्रस्तुत किया।

3. सर्व शिक्षा अभियान:-----इस योजना के तहत प्रारंभिक शिक्षा में लड़कियों के अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान ने लड़कियों के हस्तक्षेप को लक्षित किया है ।जिसमें स्कूल खोलने ,लड़कियों के लिए अलग शौचालय ,अधिक महिला शिक्षिका नियुक्त करना शामिल है।

4. राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA):-----इस योजना द्वारा शिक्षा के गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए घर के निकट विद्यालय की व्यवस्था किया गया है। इस योजना के तहतआर्थिक और विकलांगता से संबंधित बधाओ को दूर करने की परिकल्पना की गई है।

5. उड़ान:-----इस योजना के द्वारा 11th और 12th के छात्रों के लिए पढ़ाई से संबंधित मुक्त ऑनलाइन संसाधन उपलब्ध कराना है।

6.Stem शिक्षा:-----इस योजना के तहत शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने और उनकी भागीदारी को बढ़ाने के लिए आईआईटी और एनआईटी में अतिरिक्त सीटों की व्यवस्था की गई है

7".स्वयं"शिक्षा योजना:-----इस योजना के तहत 1st से लेकर 12thतक के संपूर्ण विषयों के संबंधित अध्ययन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से देने की व्यवस्था की गई है,। इसके अलावा UG,PG के संबंधित विषयों की जानकारी भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से देने की व्यवस्था की गई है जिससे बच्चे किसी भी समय अपने संबंधित विषयों को ऑनलाइन के माध्यम से पढ़ सकते हैं।

8. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय:----कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक शिक्षा योजना है जो ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों को मुफ्त शिक्षा, आवास और अन्य सुविधाएं प्रदान करती है, खासकर एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समुदायों की लड़कियों को. योजना का उद्देश्य लड़कियों को सशक्त बनाना और शिक्षा में लैंगिक अंतर को पाटना है.

छत्तीसगढ़ के जनजातीय महिलाओं तथा अन्य समूहों के महिलाओं के हित के लिए किए जाने वाला, प्रयास

छत्तीसगढ़ में जनजातीय महिला सशक्तिकरण की दिशा में शासन एवं आदिम जाति एवं अनुसूचित जनजाति विभाग द्वारा निम्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है

	कल्याणकारी योजनाएं महिला सशक्तिकरण की दिशा में
	सक्षमयोजना स्वालंबन योजना मुख्यमंत्री राज्य शहरी आजीविका मिशन मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना सुखद सहारा योजना सखी वन स्टाफ सेंटर आदिवासी संस्कृति का परीक्षण एवं विकास योजना कौशल विकास योजना सरस्वती साइकिल योजना कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना नि:शुल्क पाठ्य पुस्तकों का प्रदाय छात्रावास योजना एकलव्य आवासीय विद्यालय महतारी वंदन योजना सुकन्या योजना छत्तीसगढ़ महिला कोष प्रधानमंत्री आवास योजना स्वयं सहायता समूह

उपरोक्त जितने भी योजनाएं लागू की गई है वे सभी महिलाओं के हित के लिए और उनकी सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं जिससे उन्हें समाज में आर्थिक और सामाजिक रूप से सम्मान प्राप्त हो जो उनका मूलभूत अधिकार है छत्तीसगढ़ में निवास करने वाले जनजातीय महिलाएं और अन्य समूहों के महिलाए उपरोक्त योजना का लाभ उठाकर अपने आप में गौरवान्वित महसूस करें है। जिससे वे पुरुष प्रधान समाज में अपनी एक पहचान बना रही है। उपरोक्त योजनाओं का मुख्य उद्देश्य जनजातीय महिलाओं तथा अन्य समूहों के महिलाओं के सर्वांगीण विकास और उज्जवल भविष्य के लिए और महिला सशक्तिकरण कोऔर अधिक सशक्त बनाने के लिए एक पहल है।

राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त ने आज से कई साल पहले महिलाओं की दुर्दशा को देखकर एक कविता लिखी थी वह कविता है"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी आंचल में है दूध और आंखों में है पानी" यह कविता उस समय के महिलये जो अत्यधिक दुख तकलीफ और प्रतारणाओ का शिकार थे उन्हीं महिलाओं के लिए यह कविता लिखी गई थी । परंतु वर्तमान में यह कविता महिलाओं के ऊपर लागू नहीं हो रहा है क्योंकि वर्तमान समय में केंद्र और राज्य सरकारों के प्रयासों के द्वारा जनजाति महिला हो चाहे अन्य समूह के महिला हो वह अबला नहीं है। वह खुद भी पढ़ रही है और दूसरों को भी पढ़ा रही है खुद भी आगे बढ़ रही है दूसरों को भी आगे बढ़ा रही है वह घर का काम भी कर रही है और बाहर जब भी कर रही है और अपनी खुद की भी सुरक्षा कर रही है ।। यह सब ऊपर लिखे गए योजनाओं और शिक्षा के लिए किए गए योजनाओ के द्वारा ही संभव हो पाया है।

सुझाव:---आज भी कहीं ना कहीं केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा बनाए गए योजना चाह वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या आय के क्षेत्र में हो उतना का लाभ जनजातीय महिलाओं को नहीं मिल पा रहा है जितना मिलना चाहिए ।तो हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम उन योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए एक जुट होकर अपनी जिम्मेदारी समझ कर उन्हें उन सब योजनाओं से अवगत करायें ताकि जनजातीय महिलाएं को उनका लाभ मिल सके।

शोध विधि:---इस शोध में तथ्यों का संकलन द्वितीय स्रोतों से किया गया है तथ्यों के शोध पत्रिका एवं अभिलेख तथा विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण समाचार पत्र पुस्तक वह आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी इंटरनेट आदि से लिया गया है यह शोध वर्णनात्मक व्याख्यात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है।

निष्कर्ष:---उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि छत्तीसगढ़ की जनजातियों की भूमिका क्या है ?उनके ऐतिहासिक विरासत क्या है ?उनके ऐतिहासिक विरासत के अंतर्गत पारिवारिक रीति रिवाज क्या है? उनके पहनावा वेशभूषा ,खान-पान,व्रत त्यौहार उनकी कलाकृति भाषा बोली क्या है? उन सब की जानकारी हमें प्राप्त हुई और हमने यह भी जानने की कोशिश किया कि उनके संस्कृति और सभ्यता क्या है ?कैसे हैं? हमने यह भी जानने का प्रयास किया कि वे पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में होते हुए भी वह अपनी पारंपरिक वेशभूषा,खानपान,रीति रिवाज को नहीं भूले हैं। जनजातीय महिलाओं और अन्य समूह के महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए और उनकी शिक्षा के लिए जो योजनाएं बनाई गई हैं उन योजनाओ का संक्षिप्त विवरण किया गया है। और कुछ सुझाव भी दिए गए हैं जिससे उन महिलाओं को उन सभी योजनाओं का लाभ मिलसके।

संदर्भ सूची

1. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट।
2. अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम।
3. शिव कुमार सिंघल –बस्तर विश्वविद्यालय जगदलपुर जनजातीय महिलाओं की सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में स्थिति व सशक्तिकरण (पृष्ठ 71 ,72, 73,)
4. राजेश शुक्ला बी एल सोनकर -जनजाति महिलाओं के साक्षरता एक अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में)
5. महिला शिक्षा के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम।
6. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (ETV Bharat CG team)
7. Chhattisgarh mahila & Bal Vikas vibhag

8. सीमा पटेल-शिक्षार्थी समाजशास्त्र शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (पेज 80- 94)

9. डॉक्टर कमलेश पाल फैंसी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी उत्तर प्रदेश पेज नंबर 246-249

10. डॉ कुसुम लता कस्तूरी -जनजाति अध्ययन विभाग

11. डॉक्टर कुमकुम कस्तूरी जनजातीय अध्ययन विभाग (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय अमरकंटक) volu.8 isdu-7

12. Upadhyay Vijay Shankar 2009 Bharat ke janjatiy Sanskriti Madhya Pradesh Hindu Granth akadami Bhopal

13. Gond tribe -अनूठे रीति रिवाज वाले गुण आदिवासी-punjabkesari.in